गोप्ता) प्रभाकर था। उसे यह पद बन्धुवर्मन के बाद ही मिला होगा। बहुत सम्भव है वह बन्धुवर्मन का उत्तराधिकारी एवं पुत्र रहा हो।

फ्लीट के अनुवाद से ऐसा ध्वनित होता है कि लाट देश से दशपुर आनेवाले लोग केवल रेशमी वस्त्र बुननेवाले बुनकर (तन्तुवाय) थे। दशपुर में बस जाने के बाद उन्होंने विविध व्यवसाय अपना लिया (पंक्ति ६)। इस आधार पर दिनेशचन्द्र सरकार ने यह अभिमत प्रकट किया है कि पश्चिमी भारत में जातियों का स्वरूप रूढ़ि-बद्ध नहीं था। किन्तु पंक्ति में ऐसा कोई शब्द नहीं है जिससे प्रकट होता हो कि आनेवाले लोग केवल पट्टवाय थे। लाट से आनेवाले लोगों को मात्र **शिल्पाः** कहा गया है। अतः हमारी धारणा है कि लाट से आनेवाले लोगों में अनेक वर्ग के शिल्पी थे। उनमें एक वर्ग अथवा श्रेणि पट्टवायों की थी, जिनका उल्लेख पंक्ति १६ में हुआ है और जिन्होंने मंदिर निर्माण कराया।

इसी प्रकार पंक्ति ६ में विविध व्यवसाय करनेवालों की जो चर्चा है, उसमें ऐसा कोई शब्द नहीं है, जिससे ध्वनित होता हो कि लाट विषय से आनेवाले शिल्पियों ने अपने व्यवसाय छोड़कर दूसरे व्यवसाय अपना लिये थे। हमें तो ऐसा प्रतीत होता है कि कवि प्रवासी शिल्पियों के विविध व्यवसायों का परिचय दे रहा है या यह कह रहा है कि दशपुर में रहनेवाले विविध व्यवसाय करनेवाले लोग थे। अभिलेख में कहीं ऐसा कुछ नहीं है जिससे समाज के अस्थिर स्वरूप की किसी प्रकार की कोई कल्पना की जा सके।

सन्दर्भ

फ्लीट	इण्डियन एण्टीक्वैरी, १५, पृ० १६४। कार्पस इन्स्क्रृप्शनम् इण्डिकेरम्, ३, पृ० ७६।
ए० शामशास्त्री	एन्युएल रिपोर्ट, माइसोर आर्क्यालाजिकल डिपार्टमेंट, १६२३, पृ० २४।
जी० पी	जर्नल, इण्डियन हिस्ट्री, ११, पृ० १८६; १२, पृ० २१५।
आर पी० सुन्दरराजन्	जर्नल, इण्डियन हिस्ट्री, १६, पृ० १३०।
डी० एन० मुखर्जी	इण्डियन कल्चर, ५, पृ० ३३१।
दशरथ शर्मा	इण्डियन कल्चर, ३, पृ० ३७६; ४, पृ० २६२।
के० राम पिशरौटी	इण्डियन कल्चर, ४, पृ० १११। एस० कृष्णशास्त्री कमोमोरेशन वाल्यूम, पृ० ६६-७३।
आर० एन० शास्त्री	इण्डियन कल्चर, ४, पृ० ३६१।
जी० बी० दिस्कलकर	जर्नल बाम्बे ब्रांच रायल एशियाटिक सोसाइटी, २ (न्यू० सी०), पृ० १७६।
जगन्नाथ	प्रोसीडिंग्स इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, १६४०, पृ० ६०।
बहादुरचन्द्र छाबड़ा	स्वरूप भारती, पृ० १४-२४।
भण्डारकर आदि	कापस इन्स्क्रृप्शनम् इण्डिकेरम्, ३, (नवीन संस्करण), पृ० ३२२।

२६. करमदण्डा लिंग-लेख, वर्ष ११७

परिचय

फैजाबाद (उत्तर प्रदेश) से शाहगंज जानेवाले मार्ग पर फैजाबाद से १२ मील दूर करमदण्डा नामक एक ग्राम है। उसके निकट स्थित भराहीडिह नामक एक टीले से फैजाबाद के तत्कालीन डिप्टीकलक्टर कुँवर कामताप्रसाद को एक लिंग मिला था जो अब लखनऊ संग्रहालय में है। इसी लिंग पर यह लेख अंकित है। इसका अधोभाग खण्डित अथवा अनुपलब्ध है। पहले फोगल ने इसका संक्षिप्त विवरण प्रकाशित

Scanned with CamScanner

किया। फिर राखालदास बनर्जी ने सम्पादित कर प्रकाशित किया; तदन्तर स्टेन कोनों ने दुबारा प्रकाशित किया है।

पाठ

भाषा : संस्कृत। **लिपि** : उत्तरवर्ती उत्तरी ब्राह्मी।

१. नमो महादेवाय। म[हाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्त-पादा]-
२. नुध्यातस्य चतुरुदधि सलिलास्वादित य[शसो] [महाराजा]-
३. धिराज श्रीकुमारगुप्तस्य विजयराज्य-संवत्सर-शतेसप्तदशो[त्तरे]
४. कार्तिक मास दशम दिवसे(ऽ)स्यान्दिवस-पूर्व्वायां [च्छान्दोग्याच[आर्य्याश्व]-वाजि-
५. सगोत्रकुरमरण्य भट्टस्य पुत्रो विष्णुपालितभट्टस्तस्य पुत्रो महारा-
६. जाधिराज श्रीचन्द्रगुप्तस्य मन्त्रि कुमारामात्यस्शिखरस्वाम्यभूत्तस्य पुत्रः
७. पृथिवीषेणो महाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तस्य मन्त्रि कुमारामात्यो(ऽ)न-
८. न्तरं च महाबलाधिकृतः भगवतो महादेवस्य पृथिवीश्वर इत्येवं समाख्यातस्य[1]
९. स्यैव भगवतो यथाकर्त्तव्य-धार्म्मिक-कर्म्मणा पाद-शुश्रूषणाय भगवच्छै-
१०. लेश्वरस्वामि-महादेव-पादमूले आयोध्यक नानागोत्त्रचरण-तपः-
११. स्वाध्याय-मन्त्र-सूत्र-भाष्य-प्रवचन-पारग [।] भारडिसमद[2]-देवद्रोण्यां
१२. .....

अनुवाद

महादेव को नमस्कार !

महाराज श्रीचन्द्रगुप्त के चरण का चिन्तन करनेवाले, चार समुद्रों के जल का आस्वादन करनेवाले [यश] वाले महाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्त के विजय-राज्य के ११७वें वर्ष में कार्तिक मास का दसवाँ दिन।

इस पूर्व [कथित] तिथि को [छान्दोग्याचार्य अश्ववाजि] के सगोत्रीय कुरमरव्य-भट्ट के पुत्र विणुपालित;

उनके पुत्र महाराजाधिराज श्रीचन्द्रगुप्त के मन्त्री कुमारामात्य शिखरस्वामी;

उनके पुत्र महाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्त के मंत्री कुमारामात्य और बलाधिकृत पृथिवीशेण हुए।

[उन्होंने] पृथिवीश्वर नाम से विख्यात भगवान शिव [का यह लिंग स्थापित किया।]

इस भगवान् [लिंग] की यथाशक्य धर्म-कार्य द्वारा चरण सेवा के निमित्त भगवान शैलेश्वरस्वामी के पादमूल [के निवासी] अयोध्या-वासी विभिन्न गोत्र एवं चरण वाले स्वाध्याय. मंत्र, सूक्त एवं भाष्य के निरूपण में पारंगत, भारडिसमद देवद्रोणी·····।

टिप्पणी

जिस लिंग पर यह लेख अंकित है, उसकी स्थापना का यह घोषणा-पत्र है। इस घोषणा में लिंग के स्थापक पृथिवीशेष ने अपने नाम पर लिंग को पृथिवीश्वर नाम दिया है। लिंग की स्थापना कर उसे व्यक्तियों के नाम पर नामकरण करने की प्रथा गुप्तकाल में प्रायः देखने में आती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के

१. भण्डारकर ने इसे कृतो के रूप में संशोधित करने का सुझाव दिया है।
२. भण्डारकर ने इसका [आ]वर्तित संसद के रूप में वाचन किया है।

Scanned with CamScanner

काल में मथुरा में लकुलीश सम्प्रदाय के एक व्यक्ति ने अपने गुरु और उनके गुरु के नाम पर कपिलेश्वर और उपमितेश्वर नाम से दो लिंग स्थापित किये थे (अभिलेख ६)। इसी प्रकार निर्मण्ड ताम्रलेख में मिहिरलक्ष्मी नाम्नी राजमहिषी द्वारा मिहिरेश्वर नाम से शिव-लिंग की स्थापना का उल्लेख हुआ है। यह परम्परा आज भी यत्र-तत्र देव-मूर्ति की स्थापना में देखने में आती है।

लिंग के संस्थापक पृथिवीशेण ने इस लिंग की सेवा-पूजा के निमित्त कोई व्यवस्था की थी जिसकी चर्चा लेख के अधोभाग में की गयी रही होगी; किन्तु वह अंश अनुपलब्ध है इस कारण उसके सम्बन्ध में विशेष कुछ नहीं कहा जा सकता। अयोध्यावासी कुछ विद्वान् ब्राह्मणों का सम्बन्ध इस व्यवस्था से रहा होगा ऐसा अनुमान पंक्ति १०-११ की शब्दावली से जान पड़ता है।

पंक्ति ११ के अन्त में कुछ विद्वानों ने **भारडिसमद देवद्रोणी** पढ़ा है। स्टेन कोनों का अनुमान है कि **भारडि** का तात्पर्य भराहीडिह से है, जहाँ से यह लिंग प्राप्त हुआ है और **समुद** सम्भवतः **समुद्र** है जो शिव के नामों में से एक है। दिनेशचन्द्र सरकार ने **समुद** का तात्पर्य **समुद्रेश्वर** नामक किसी शिवलिंग से अनुमान किया है। किन्तु भण्डारकर के पाठ में भारडि समद के स्थान में 'आवर्तित' संसद है। वैसी अवस्था में इसका तात्पर्य लिंग से संलग्न देव-द्रोणी मात्र होगा।

सामान्य रूप से **देव-द्रोणी** का तात्पर्य देव-प्रतिमाओं के जुलूस से लिया जाता है। किन्तु वेरावल (गुजरात) से प्राप्त एक अभिलेख में आये **श्री सोमनाथ-देवद्रोणी-प्रतिबद्ध-महायणान्तः पाति** से ऐसा जान पड़ता है कि देवद्रोणी **'मन्दिर की सम्पत्ति'** को कहते थे। हमारी समझ में इसी अर्थ में **देवद्रोणी** का प्रयोग यहाँ भी हुआ है और यहाँ **भारडि समद देवद्रोणी** से तात्पर्य सम्भवतः भारडि (भराहीडिह) नामक ग्राम में स्थित अथवा लिंग से संलग्न देव-सम्पत्ति है। **लिंग की पूजा-अर्चा के निमित्त** यदि यह अनुमान ठीक है तो यह सहज अनुमान हो सकता है कि पृथिवीशेष ने अयोध्यावासी ब्राह्मणों को कोई देव-सम्पत्ति सुपुर्द की थी जिसका विवरण अनुपलब्ध नीचे की पंक्तियों में रहा होगा।

लेख से महत्व की सूचना यह प्राप्त होती है कि गुप्त-शासन-व्यवस्था में राजपद वंशानुगत हुआ करते थे। इस लेख से प्रकट होता है कि पृथिवीशेष कुमारगुप्त (प्रथम) का मन्त्री था और उसका पिता शिखरस्वामिन भी चन्द्रगुप्त (द्वितीय) का मन्त्री था। शिखरस्वामिन के सम्बन्ध में **काशीप्रसाद जायसवाल** की धारणा है कि वह **कामन्दकीय नीतिसार** का रचयिता था।

सन्दर्भ

स्टेन कोनो	एपीग्रेफिया इण्डिका, १०, पृ० ७१।
फोगल	प्रोग्रेस रिपोर्ट, आर्क्यालाजिकल सर्वे (नर्दन सरकिल), १९०७-८, पृ० ३९।
राखालदास बनर्जी	जर्नल एण्ड प्रोसीडिंग्स, एशियाटिक सोसाइटी बंगाल, ५ (१९०९), पृ० ४५८।
भण्डारकर	इन्स्कृप्शन्स आव द अर्ली गुप्त किंग्स, पृ० २८०-२८२।

Scanned with CamScanner